याही भांत अछर की, बीच बन गलियां जानवर।
खेल खेलें अति सोहने, क्यों बरनों सोभा दोऊ घर।।५७।।

इसी तरह से अक्षरधाम की तरफ वन, गलियां और जानवरों की शोभा है। जहां पर जानवर तरह-तरह के सुहावने खेल खेलते हैं। इन दोनों धामों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर।
क्यों कहूं इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर।।५८।।

दोनों धाम के दरवाजे आमने-सामने हैं। इनकी सुन्दर रोशनी फैलकर आपस में टकराती है। उस शोभा का इस जबान से कैसे वर्णन करूं?

आगूं बड़े द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए।
रंग पांचों नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए।।५९।।

रंग महल के बड़े दरवाजे के दोनों तरफ चबूतरों की किनारे पर बीस थंभ (दस खुले, दस अकसी) आए हैं। यह पांच रंगों के हैं (हीरा, मानिक, पुखराज, पाच और नीलवी) और झलक रहे हैं। उसकी सिफत किस मुख से बयान करें?

द्वार आगूं दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक।
हरा लाल दोऊ पर दरखत, हक हादी रूहों ठौर सौक।।६०।।

धाम के द्वार के आगे दो चबूतरे हैं। नीचे चांदनी चौक में दो सुन्दर चबूतरे हैं जिनके ऊपर एक पर हरा, एक पर लाल वृक्ष आए हैं। यहां पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बड़ी चाहना से बैठते हैं।

भोम बन आकास का, अवकास न माए उजास।
कछुक आतम जानहीं, सो कह्यो न जाए प्रकास।।६१।।

यहां की भूमि, वन तथा आकाश का तेज समाता नहीं है। यदि आत्मा में कुछ अनुभव हो जाए तो फिर कहा नहीं जाता।

महामत कहे बन धाम का, विध विध दिया बताए।
जो होसी ब्रह्मसृष्ट का, ए बान फूट निकसे अंग ताए।।६२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के ऐसे वन की हकीकत तरह-तरह से तुमको बताई है। अब जो ब्रह्मसृष्टि होंगी, यह वचन उनके हृदय में चुभ जाएंगे तो परमधाम याद आ जाएगा।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३६८ ।।

जमुना जोए किनारे सात घाट

केल का घाट

कतरे कई केलन के, लटक रहे जल पर।
आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर।।१।।

केलों के कई गुच्छे जमुनाजी के जल पर लटकते हैं। वह सब एक समान शोभा देते हैं। कोई आगे पीछे नहीं है।

Nijanand App

दिवालां थंभन की, नरमाई अतंत।
छाया पात गली मन्दिरों, तले उज्जल रेत चिलकत।। २ ।।

यहां पर केलों के वृक्षों के ही थंभ हैं जो अत्यन्त नरम हैं। इनके पत्तों की छाया गली और मन्दिरों के ऊपर हैं और नीचे सुन्दर रेत चमकती है।

कई चौक ठौर खेलन के, छाया पात सीतल।
खूबी जुबां ना केहे सके, रेत मोती निरमल।। ३ ।।

यहां खेलने के कई चौक और ठिकाने हैं। पत्तों की छाया शीतल है तथा मोती के समान निर्मल है। इसकी शोभा जबान से वर्णन करने में नहीं आती है।

कच्चे पक्के केलों कतरे, एक खूबी और खुसबोए।
जुदी जुदी जिनसों सोभित, सुन्दर चौक में सोए।। ४ ।।

कच्चे और पक्के केलों के गुच्छे बड़े सुन्दर लगते हैं और खुशबू देते हैं। इनकी अलग-अलग भांति की सुन्दरता चौकों में शोभा देती है।

सैयां आवत झीलन को, निकस मन्दिरों द्वार।
ए समया कह्यो न जावहीं, सोभा सिफत अपार।। ५ ।।

यहां पर सखियां स्नान करने के लिए मन्दिरों और दरवाजों से निकलकर आती हैं। उस समय की शोभा और सिफत बेशुमार है। इसका वर्णन शब्दों में नहीं होता।

ए घाट पोहोंच्या बड़े वन को, जित हिंडोलों हींचत।
उत चल्या किनारे जमुना, हद लिबोई से इत।। ६ ।।

यह केल का घाट, पीछे बड़े वन तक गया है जहां पर सखियां हिंडोले झूलती हैं। पूर्व की तरफ जमुनाजी के किनारे तक फैला है। दाहिने तरफ लिबोई (नीबू) का घाट शोभा देता है।

घाट लिबोई का

छत्रियां लिबोइयन की, सुगंध सीतल अति छांहें।
पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारियां, मिल गैयां माहों माहें।। ७ ।।

लिबोई (नीबू) के घाट में पेड़ों से पेड़ की डालियां मिलने पर छतरियों के समान शोभा है। इसकी छाया शीतल और सुगन्धित है।

कई विध के फल लटकत, जल पर बनी जो हार।
लटके जवेर जड़ाव ज्यों, ऐसी बन की रची किनार।। ८ ।।

उन छतरियों के नीचे नीबू के फल पानी के ऊपर लटक रहे हैं। इनकी शोभा जड़ाव जैसी लग रही है। ऐसी ही शोभा जमुनाजी के किनारे की है।

या विध फल छाया मिने, बनमें झूमत अंदर।
कहूं हारे कहूं फिरते, कई रंग चन्द्रवा सुन्दर।। ९ ।।

छतरी के नीचे छाया में सुन्दर-सुन्दर नीबू के फल लटक रहे है। किसी जगह सीधी पंक्तियां हैं, कहीं पर गोलाई में हैं। इस तरह सुन्दर चन्द्रवा के समान शोभा है।

Nijanand App

सोभा तले रेतीय की, कहा कहूं छाया ऊपर।
कही न जाए लिबोई घाट की, सोभा अचरज तले भीतर।। १० ।।

नीचे रेती के ऊपर छाया आने से नीबू घाट की अन्दर की शोभा हैरानी में डाल रही है।

पेड़ जुदे जुदे गेहेरी छाया, सब पेड़ों छत्री एक।
देख देख के देखिए, जानों सबसे ए ठौर नेक।। ११ ।।

पेड़ अलग-अलग हैं जिनकी छाया घनी है। लगता है जैसे सब पेड़ों की एक ही छतरी हो। देख-देखकर अनुभव होता है कि यह जगह सबसे अच्छी है।

धाम छोड़ आगे चल्या, तरफ चेहेबच्चे पास।
इन बन की सोभा क्यों कहूं, जित नित होत विलास।। १२ ।।

यह नीबू का घाट रंग महल के ईशान कोने के (सोलह हांस का) चेहेबच्चे (हौज) से आगे केल घाट तक जाता है। इस वन की शोभा जहां नित्य आनन्द की लीला होती है, कैसे कहूं?

जब खेलें इत सखियां, स्याम स्यामाजी संग।
तब सोभा इन बन की, लेत अलेखे रंग।। १३ ।।

जब श्री राजश्यामाजी के साथ सखियां यहां खेलती हैं, तब इस वन की शोभा के अनेक रंग हो जाते हैं।

घाट अनार का

ए बन खूबी देत हैं, चल्या दोरी बंध हार।
फल नकस की कांगरी, लटकत जल अनार।। १४ ।।

अनार के घाट में वृक्ष एक पंक्ति में लगे हैं और फलों की शोभा जो जल के ऊपर लटकते हैं कांगरी (किनारे की चित्रकारी) के समान लगती है।

केतिक छाया जल पर, केतिक छाया बार।
ए दोऊ बराबर चली, जमुना बांध किनार।। १५ ।।

कुछ वृक्षों की कुछ छाया जल पर है और कुछ की किनारे पर। यह दोनों जमुनाजी के किनारे पर एक पंक्ति में चली जाती हैं।

घाट अनार को अति भलो, एकल छत्री सब जान।
घट बढ़ काहूं न देखिए, छाया गेहेरी सब समान।। १६ ।।

अनार के घाट की भी एक छतरी के समान शोभा है। कहीं कमी बेशी नहीं है। सब जगह घनी छाया है।

जो जहां घाट बन देखिए, जानों एही बन विसेक।
एक से दूजा अधिक, सो कहां लो कहूं विवेक।। १७ ।।

जहां जाकर जिस भी घाट के पेड़ों को देखें, तो लगता है कि इसी घाट के पेड़ सबसे अच्छे हैं। इस तरह से एक से दूसरे की शोभा अधिक दिखाई देती है। उसका कहां तक वर्णन करूं?

Nijanand App

कहूं फूल कहूं फल बने, कहूं पात रहे अति बन।
जुदी जुदी जुगतें मंडप, जानों बहु रंग मनी कंचन।। १८ ।।

इस मंडप के नीचे कहीं फूल, कहीं फल, कहीं पत्ते वन में शोभा देते हैं और ऐसा लगता है जैसे सोने में बहुत रंगों के नग जड़े हों।

इन पेड़ों खूबी क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल।
रोसन रेत खुसबोए बन, आए लग्या दिवाल।। १९ ।।

इन पेड़ों की खूबी का कैसे वर्णन करूं? देख करके बड़ी खुशी होती है। रेत चमकती है। वन खुशबू से भरा है और रंग महल की दीवार तक आया है।

अमृत बन–घाट पाट का

दोऊ पुलों के बीच में, सोभित सातों घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच थंभ चांदनी पाट।। २० ।।

दोनों पुलों के बीच सात घाट शोभा देते हैं। तीन बायीं तरफ, तीन दायीं तरफ बीच में थंभों के ऊपर पाट डालकर पाट घाट बना है।

अमृत बन अति सोभित, घाट पाट का जे।
आगूं दरवाजे निकट, बन बन्या जो सुन्दर ए।। २१ ।।

अमृत वन जो अति सुन्दर है उसमें पाट घाट है। यह अमृत वन धाम दरवाजे के सामने बड़ी सुन्दर शोभा देता है।

कई रंग के इत बिरिख हैं, नीले पीले सेत लाल।
क्यों कहूं सोभा इन मुख, जाकी पूरन सिफत कमाल।। २२ ।।

कई रंग के यहां वृक्ष हैं। नीले, पीले, सफेद, लाल वृक्षों की शोभा कमाल की है। यह इस मुख से कैसे कही जाए?

अखोड़ अंजीर बन अमृत, ऊपर छाया अंगूर।
एक छाया पात दिवाल लो, क्यों कर बरनों ए नूर।। २३ ।।

अखरोट, अंजीर, आम के पेड़ों पर अंगूर की बेलों की छाया है। इस घाट की छाया रंग महल की दीवार तक चली जाती है। इसकी शोभा का बखान कैसे करें?

कई रंग हैं एक पात में, कई रंग हैं फूल फल।
अब क्यों बरनों मैं इन जुबां, कई बन हैं सामिल।। २४ ।।

यहां एक पत्ते में कई रंग हैं। फूल और फल में कई रंग हैं। लगता है कई वन मिले हैं। इसकी शोभा वर्णन से बाहर है।

केते रंग एक पात में, केते रंग एक फूल।
केते रंग एक फल में, केते रंग डाल मूल।। २५ ।।

कई रंग एक पत्ते में, कई रंग एक फूल और फल में और कितने ही रंग डालियों और जड़ों में हैं।

Nijanand App

ए बन जोत इन भांत की, रोसन करत आसमान।
आप अपना रंग ले उठत, कोई सके न काहूं भान।। २६ ।।

इस वन की किरणें आसमान तक जाती हैं और सभी रंगों की किरणें इतनी जोरदार हैं कि एक दूसरे के रंग को दबा नहीं सकतीं।

कई मेवे इन बन में, केती कहूं जिनस।
जुदे जुदे स्वाद कई विध के, जानो एक से और सरस।। २७ ।।

इस वन में कई तरह के मेवे हैं। इनके कई जिन्स हैं जिनके तरह-तरह के स्वाद एक-दूसरे से अच्छे लगते हैं।

इन पेड़ों खूबी क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल।
ए रेत रोसन खुसबोए बन, ए निरखत बदले हाल।। २८ ।।

इस वन की पेड़ों की सुन्दरता का कैसे बयान करूं? देखकर बड़ी खुशी होती है। यहां की रेती की चमक और वन की खुशबू हालात को बदल देती है।

घाट जांबू का

निकट घाट पाट के, सोभित है अति बन।
इन मुख खूबी क्यों कहूं, छत्रियां जांबूअन।। २९ ।।

पाट घाट अमृत वन से लगता हुआ जांबू (जामुन) का घाट बड़ी शोभा देता है। जांबू वन की छतरियों की शोभा मुख से वर्णन नहीं हो सकती।

गेहेरी छाया अति निपट, देखत नहीं आसमान।
जमुना धाम के बीच में, ए बन सोभा अमान।। ३० ।।

छाया बड़ी गहरी है कि आसमान दिखाई नहीं देता। जमुनाजी और रंग महल के बीच में इस वन की शोभा बेशुमार है।

ए मंडप जानों चंद्रवा, कहूं ऊंचा नीचा नाहें।
ए सोभा जुबां ना केहे सके, होंस रेहेत दिल माहें।। ३१ ।।

पेड़ों का मंडप चन्द्रवा जैसा लगता है। कही ऊंचा-नीचा नहीं है। यहां की शोभा इस जबान से वर्णन करने में नहीं आती। वर्णन करने की होंस (इच्छा) दिल में ही रह जाती है।

अनेक रंग इन ठौर के, क्यों कहूं इतका नूर।
रोसन जिमी प्रफुलित, क्यों कहूं जुबां जहूर।। ३२ ।।

इस ठिकाने पर अनेक रंग हैं जिसकी शोभा बेशुमार है। यहां जमीन प्रफुल्लित दिखाई देती है। इस जबान से यहां की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

एह सिफत न जाए कही, जिन बन कबूं न जवाल।
ए जुबां खूबी तो कहे, जो कोई होवे इन मिसाल।। ३३ ।।

इस जांबू वन में कभी कुछ कमी आने का सवाल ही नहीं होता। यहां की सिफत बेशुमार है। यदि इसकी कोई मिसाल हो तो खूबी का वर्णन सम्भव हो।

Nijanand App

सिफत न होवे रेत कीं, ना होवे बन सिफत।
जो कछू कहूं सो उरे रहे, मेरी जुबां ना पोहोंचत।। ३४ ।।

यहां की रेती तथा वन की सिफत नहीं हो सकती। इनकी शोभा को वर्णन करने में मेरी जबान पहुंचती नहीं हद में ही रह जाती है।

घाट नारंगी का

चार हार फल की बनी, जल पर दोरी बंध।
तलें सात सात की कांगरी, माहें नकस कई सनंध।। ३५ ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर एक सीध में नारंगी फल की चार हारें (कतारें) हैं। नीचे सात-सात फलों की कंगूरे जैसे नमूना है जिसमें कई तरह की नक्शकारी की है।

खुसरंग फल नारंग के, पीलक लिए रंग लाल।
झांईं उठे माहें जल, ए सोभित इन मिसाल।। ३६ ।।

नारंगी के फल के रंग सुहावने हैं, यह पीलापन तथा लालिमा लिए हैं। इनकी परछाईं जमुनाजी के जल में सुन्दर लगती है। इस तरह का यह वन सुहावना है।

नारंग बन की छत्रियां, जाए लगी बट घाट।
फल फूल पात जड़ित ज्यों, जानों रच्यो अचंभो ठाट।। ३७ ।।

नारंगी वन की छतरी बट घाट तक जाती है। इसमें फल, फूल, पत्ते जड़ाव जैसे लगते हैं। यह शोभा बड़े अचम्भे जैसी है।

एकल छाया रेती रोसन, पूरन सिफत कमाल।
और अनेक बन आगूं भला, ए हद छोड़ चल्या दिवाल।। ३८ ।।

पूरे वन पर एक ही छाया है। रेत अति सुन्दर है। कमाल की शोभा बनी है। यह वन रंग भवन की दीवार से आगे दाहिनी तरफ है (जो बट पीपल की चौकी से लगता है।)

इन बन की सोभा अति बड़ी, आवत आतम में जोए।
इन नैन श्रवन के बल थें, मुखसे न निकसे सोए।। ३९ ।।

इस वन की शोभा आत्मा के अनुभव में जितनी अच्छी लगती है उतनी वर्णन करने में नहीं आती। यह तो कानों से, आंखों से ही अनुभव में आती है।

इन बन सोभा अपार है, कछु आतम उपजत सुख।
तिनको हिस्सो लाखमों, कह्यो न जाए या मुख।। ४० ।।

इस वन की शोभा बेशुमार है जिसे देखकर आत्मा में अपार सुख होता है। उसका एक लाखवें हिस्से का बयान भी इस मुख से नहीं होता।

घाट बट का

जो बट बन्यो जमुना पर, अनेक तिनकी डार।
निपट पसारा इनका, जित बैठ करत सिनगार।। ४१ ।।

जमुनाजी के किनारे पर जो बट का वृक्ष है उसकी अनेक डालियां हैं। इसका फैलाव बहुत बड़ा है। यहां बैठकर कभी श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां सिनगार करती हैं।

Nijanand App

ऊंचा निपट द्योहर ज्यों, तले हाथों डारी लगत।
डारों डारी अति विस्तरी, सुमार न इन सिफत।।४२।।

यह घाट मन्दिर के समान ऊंचा है और नीचे डालियां हाथ की ऊंचाई तक हैं। डालों में डालियों का विस्तार है। ऐसी बेशुमार सिफत है।

जानो थंभ दिए बडवाईके, फिरते फिरते हार चार।
सोभा लेत पात फूल, ए बट बड़ो विस्तार।।४३।।

लगता है बड़वाइयां (सोर जो जमीन से लगी रहती हैं) चार हारों में घेरकर थंभ के समान शोभा देती हैं। यहां पत्ते, फूलों की शोभा का विस्तार है।

छत्री पांच ऊपरा ऊपर, जानों रचिया भोम समार।
एक भोम रेती तले, ऊपर भोम बट चार।।४४।।

इसके ऊपर पांच भोम हैं, लगता है बड़ी संवार कर बनाई हैं। पहली भोम के नीचे रेती है और चार भोमें बट की डालियों से बनी हैं।

एक पड़त झरोखे जल पर, और तरफ सब बन।
ऊपर भोम धाम देखिए, दसों दिसा नूर रोसन।।४५।।

पूर्व की दिशा में बड़वाइयों के झरोखे जल पर आते हैं और तीन तरफ वन पर ऊपर की भोम से परमधाम दिखाई देता है। दसों दिशाओं की सुन्दर शोभा भी दिखाई देती है।

इत बोहोत ठौर खेलन के, कई जिनसें तले ऊपर।
बैठत दौड़त कूदत, खेलत कई हुनर।।४६।।

यहां खेलने के बहुत ठिकाने हैं और ऊपरा ऊपर कई जगह खेलने की बनी हैं। यहां बैठते हैं, दौड़ते हैं और उछलकूद की कई कलाएं दिखाते हैं।

ठेकत हैं कई जल में, और कूद चढ़े कई डार।
खेल करें कई भांत सों, सब अंगों चंचल हुसियार।।४७।।

कई सखियां जल में कूदती हैं और कूदकर डाल पकड़कर चढ़ जाती हैं और तरह-तरह के खेल अपने चंचल अंगों से मस्ती में खेलती हैं।

तरफ चारों फिरते हिंडोले, उपली लग भोम जोए।
धाम तलाव जमुना नारंगी, सखियां हींचत बट पर सोए।।४८।।

चारों तरफ ऊपर की भोम तक हिंडोले हैं। धाम, तालाब, जमुनाजी और नारंगी घाट से सखियां बट पर आकर झूलती हैं।

अतंत सोभा इन घाट की, छाया चली जल पर।
ए बट या और बिरिख, जल छाए लिया बराबर।।४९।।

बट घाट की शोभा बेशुमार है। जिसकी छाया जल पर पड़ती है। इस बट के वृक्ष की और बड़वाइयों की छाया जल पर आ रही है।

Nijanand App

घाट बट को अति बड़ो, जल लिए चल्या किनार।
कई बन इत बहु विध के, जानों बने दोरी बंध हार।।५० ।।

बट का घाट बहुत बड़ा है और जमुनाजी के किनारे पर जल तक फैला है। इस तरह से दोरी बन्द हार (कतार) में यमुनाजी के किनारे पर कई तरह के वृक्ष आए हैं।

सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज बन।
अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमिन।।५१ ।।

सातों घाटों का वर्णन किया। आगे बट का पुल है और उससे आगे कुंजवन की शोभा है। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो यह अपनी न्यामत है। इसे सदा चित्त में धारण करो।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४१९ ।।

कुंज बन मंदिर

सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूं सोभा सोए।। १ ।।

दोनों पुलों के बीच में सुन्दर सात घाट शोभित है। इन दोनों पुलों की पांच भोम छठी चांदनी है। इसकी शोभा कैसे कहूं?

साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात।
पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात।। २ ।।

दोनों पुलों के आमने-सामने के झरोखे (दरवाजे) सुन्दर शोभा देते हैं। दोनों पुल जमुनाजी के दोनों किनारे ताल जैसी शोभा देते हैं। जमुनाजी के दोनों किनारों पर जो २५० मन्दिर की पाल आई है उन पर बड़े वन की पांच हारें, पांच भोम छठी चांदनी आई है जो जमुनाजी के दो पुलों पर भोम से मिलती है इस तरह से जमुनाजी एक ताल ३५०० मन्दिर का लम्बा ५०० मन्दिर का चौड़ा लगता है।

तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत।
स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत।। ३ ।।

दोनों पुलों के दस घड़नाले (थंभों के बीच की जगह जहां से पानी बहता है) दस दरवाजों से निकलते हैं और ऐसा लगता है जैसे बीच में नहरें चल रही हों। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां इस पुल के महलों में अक्सर खेलते हैं।

खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैयन को।
कई विध खेल कहूं केते, आवें ना जुबां मों।। ४ ।।

जब इन महलों में आकर खेलते हैं तो श्री राजजी महाराज सखियों को कई तरह से सुख देते हैं तथा कई तरह से खेल खेलते हैं। जिसका वर्णन यहां की जबान से नहीं होता।

इन मोहोल आगूं घाट केल का, इस तरफ आगूं बट घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट।। ५ ।।

उत्तर की तरफ पुल के पास केल का घाट इसी तरह से दक्षिण की ओर पुल के पास बट का घाट है। पाट घाट बीच में है और दाएं-बाएं तीन-तीन घाट हैं।

Nijanand App